[This question paper contains 4 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 268 **D** आपका अनुक्रमांक .....

Unique Paper Code : 205155

Name of the Course : **B.A. (Programme)**

Name of the Paper : Hindi Discipline
हिन्दी अनुशासन (कथा एवम् संस्मरण साहित्य)

Semester : I

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. हिन्दी कहानी **अथवा** हिन्दी उपन्यास की विकास-यात्रा पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए। (9)

2. हिन्दी संस्मरण साहित्य के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

महादेवी वर्मा के संस्मरणों की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। (9)

3. किसी **एक** गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (9)

(क) बचपन से ही उसे आराम और पैसा मिला है, इससे इन दोनों चीजों से उसका मन जैसे भरा हुआ है। वह इनकी जरा भी परवाह नहीं करता। वह जिन्दगी में मुकाबला चाहता है। जोखिम को वह प्यार करता है, ढूँढ़ता है कि जोखिम के काम उसे मिलें। उसके बाबूजी उसके इस स्वभाव से अप्रसन्न नहीं हैं। सीधी-भोली-चिकनी दुनियादारी, जहाँ गड्ढों से बच-बचकर सिर्फ पक्की बनी-बनाई सड़क पर ही चलकर संतोष मान लेना पड़ता है, कोई बहुत श्रेय की बात नहीं है- यह बाबूजी ने अपने सफल जीवन में समझ लिया है। इन्होंने प्रतिष्ठा भी बनाई, रुपया भी पैदा किया ... पर कुछ नहीं। जीवन में कभी बड़ा रस नहीं पाया।

अथवा

वही कमरा है, वही आला है, वही कट्टो है। फिर भी वही नहीं है। उसी पात्र में वैसा ही सफेद दूध है पर जैसे जादू का फूँक फेर दिया गया है, और वह दूध नहीं हलाहल है। इस कमरे की स्मृति, वह सामने का आला जिसमें उस दिन का छह पैसे का दर्पण रक्खा है, और वह कंघा और टिकुली की डिबिया, -मानो सब उसको चिढ़ाते हुए उससे कह रहे हैं - तुमने हमें धोखा देकर रक्खा है, हम पराये हैं। पराये हैं !' (परख से)

(ख) 'इस अपूर्व ध्वंस-लीला के साथ ही रोजगार की कुछ नई सूरतें भी निकल आई थीं। नए ढंग से तालीम पाए हुए आदमियों का एक नौकरीपेशा बाबू-तबका और आपसी भेद-भाव भूलकर अनोखी मशीनों के ज़रिए नए तौर-ओ-तरीकों से काम करने वाले मज़दूरों का एक सर्वहारा-वर्ग अस्तित्व में आ चुके थे।'

अथवा

गाँव के नौजवान इस भली-भली बातों का मतलब खूब समझते थे। 'सत्तर चूहे खाकर बिल्ली चली हज को' से उनसे छिपा नहीं था। पाठक की माँ वर्ष में एक बार भागवत का पारायण करवाती थी, नौ दिनों तक। जैनरायन के घर प्रति मास, संक्रांति के दिन, सत्यनारायण की पूजा होती थी। परंतु इससे क्या ! ज़मीन की उनकी भूख का न ओर था, न छोर... परमार्थ और स्वार्थ साथ-साथ चलते रहे इन परिवारों में। (बाबा बटेसरनाथ से)

(ग) माधवी नये आवेश में सहसा कोवलन के चरण छोड़ कटार उठाकर अपना अन्त करने चली। कोवलन ने झपटकर मृत्यु-वाहिनी को माधवी की मुट्ठी से झटकर दूर फेंक दिया और उसे बलपूर्वक अपने पास खींच उन्मत्त आलिंगन में बाँधकर भरे स्वर में बोला, "मुझे तुम्हारे प्रेम पर विश्वास है, इसीलिए मैं अपने-आपको तुम पर निछावर कर चुका हूँ।"

अथवा

कहने की देर थी। माधवी ने वातावरण में जादू भरना आरम्भ कर दिया। सम्पूर्ण हृदय से उसने अपने प्रियतम को रिझाना आरम्भ किया। अपनी महाविजय पर माधवी आनन्दोन्मत्त हो उठी थी। चेलम्मा और पेरियनायकी जैसी अनुभवसिद्ध वेश्याओं के उपेदशों की अग्नि-रेखा मिटाकर उसका प्रेम अपनी निष्ठा से आगे बढ़ गया था। जो कोई न कर सकी वह माधवी ने किया; जो किसी का प्रेमी न दे सका वह माधवी ने अपने प्रेमी से पाया। (सुहाग के नूपुर से)

4. किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए -

(i) 'परख' उपन्यास के कथा-विन्यास का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'परख' के आधार पर बिहारी का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

(ii) बाबा बटेसर नाथ के मूल कथ्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'बाबा बटेसर नाथ' के प्रमुख पात्रों का परिचय दीजिए।

(iii) 'सुहाग के नूपुर' के आधार पर तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति पर विचार कीजिए।

अथवा

'सुहाग के नूपुर' की माधवी की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (8)

आर्द्रा नक्षत्र; आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़ जिसमें देवदुन्दुभी का गम्भीर घोष। प्राची के एक निरभ्र कोने से स्वर्ण-पुरुष झाँकने लगा था - देखने लगा महाराज की सवारी। शैल माला के अंचल में समतल उर्वरा-भूमि से सौंधी बास उठ रही थी। नगर तोरण से जयघोष हुआ, भीड़ में गजराज का चामरधारी शुण्ड उन्नत दिखाई पड़ा। वह हर्ष और उत्साह का समुद्र हिलोर भरता हुआ आगे बढ़ने लगा।

अथवा

मैं कुछ बोला नहीं। मेरा मन जाने कैसे गम्भीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है; बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इल्ज़ाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है।

6. 'हंसा जाइ अकेला' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'नमक का दारोगा' के आधार पर वंशीधर का चरित्र-चित्रण कीजिए। (10)

7. 'छायावादयुगीन स्मृतियाँ' पाठ के अंश के आधार पर रामनाथ सुमन की संस्मरण सम्बन्धी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

जानकीवल्लभ शास्त्री किन कारणों से पृथ्वीराज कपूर को 'नाट्य सम्राट' की संज्ञा देते थे ? उत्तर दीजिए। (15)